वस्तर भूखण तणी रे, विगत कोण लेसे।
ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोण देसे।।७५ ।।

वस्त्र और आभूषण की हकीकत का वर्णन धनी के बिना कौन जानता है? जो अब बताएगा। अपने अनुभवों के सुखों का ज्ञान, साथी जानकर अब दूसरा कौन देगा?

मूल तारतम तणी, कोण प्रीछवसे रे बडाई।
धाम धणीसूं मूने, कोण करी देसे रे सगाई।।७६ ।।

मूल तारतम वाणी (धाम धनी और पच्चीस पक्ष) के ज्ञान को कौन समझाएगा? धाम धनी से हमारी निसबत (सम्बन्ध) की पहचान कौन कराएगा?

मूल तारतमतणा, कोण करसे रे विचार।
आसामुखी हुती इंद्रावती, मारा प्राणना आधार।।७७ ।।

अब मूल पार के ज्ञान का कौन विचार करेगा? श्री इन्द्रावतीजी विलाप करके कहती हैं, हे मेरे प्राणाधार! आप पर तो मेरी बहुत आशाएं टिकी थीं।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १८५ ।।

भाखा सिंधी जाटी

मूंजी सैयल रे, सजण हुअडा मूं गरें।
मूं न सुजातां सिपरी, हल्या कारयूं घणूं करे।। १ ।।

हे मेरी बहन! धनी मेरे घर आए थे। मैंने धनी को नहीं पहचाना। वह पुकार-पुकार कर चले गए।

सजण आया मूं गरे, मूं न सुजातां सेंण।
गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणी भती भती जा वेण।। २ ।।

मेरे प्रीतम मेरे घर आए थे, किन्तु मैंने अपने प्रीतम को नहीं पहचाना। उन्होंने प्रेम से तरह-तरह के वचनों से बातें कीं।

मूंके जा घारण आवई, जे अंई पसो साथ।
त खरे बपोरे सेज सोझरे, मूंके थेई रात।। ३ ।।

मुझे नींद आ गई। तुम देखती हो कि सामने दोपहर की धूप (सहज उजाले) में मेरे लिए अंधेरा हो गया (रात हो गई)।

सजण आया मूं न सुजातम, मूंके चेयाऊं घणा वेण।
कंन अखियुं फूटियुं, व्या फूट्या हिए जा नेंण।। ४ ।।

प्रीतम आए, मैंने नहीं पहचाना। मुझसे तरह-तरह के वचन कहे। आंख-कान फूट गए और हृदय के नेत्र (अन्दर की आंखें) भी फूट गयीं।

सजण विया निकरी, हांणे आंऊं करियां कीं।
अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणें रूअण रातो डीं।। ५ ।।

प्रीतम हमारे बीच से चले गए। अब मैं क्या करूं? मेरे हाथ से अवसर निकल गया। अब रात-दिन रोना ही है।

Nijanand App

पिरी हल्या प्रभातमें, आऊं उथिस अवेरी।
कीं वंजाइयां वलहो, जे हुंद जागां सवेरी।। ६ ।।

प्रीतम बहुत सवेरे चले गए। मैं देर से उठी। मैं प्रीतम को कैसे खो देती यदि मैं जल्दी जाग जाती।

जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर वंजाइयां कीं।
हुंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेई नी।। ७ ।।

मेरा जीव यदि तभी जाग जाता तो अवसर न खोती और मैं प्रीतम का साथ न छोड़ती। मेरे बीच माया की लहर आ गई थी। (घर में बैठी रही)।

हांणे डिसूनी डोहे निहारियां, तां जर भरया अतांग।
महें लेहेरयुं मेर जेडियुं, व्या मछे पेरां न्हाय मांग।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं कि बहुत गहरा सागर मोहजल का भरा है। इस मोह सागर में लहरें (मजबूरियां) पर्वतों जैसी ऊंची उठ रही हैं। दूसरे बेशुमार मगरमच्छ (रिश्तेदार) हैं, जिनसे निकलने का रास्ता नहीं मिलता।

महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर।
हिक वेर न वेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर।। ९ ।।

जल के अन्दर अलग-अलग तरह की भंवरें (सांसारिक समस्याएं) पड़ती हैं। तरह-तरह से लहरों के प्रवाह (मजबूरियां) आते हैं। एक पल भी सुख से बैठ नहीं सकते। यह तो दुःख का ही घर दिखता है।

हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ।। १० ।।

एक तो घोर अंधेरा है, दूसरा आंखों से दिखाई नहीं देता है। मेरे हृदय का कोई ठिकाना नहीं है। प्रीतम ऐसी विषम धारा (कठिन समय में) से मुझे पार उतारने आए थे।

मूं कारण सैयल मूंहजी, हिनमें विधाऊं पांण।
कूकडियूं करे करे, नेठ उथी वियां निरवांण।। ११ ।।

हे सखी! मेरे लिए प्रीतम स्वयं इस संसार में उतर कर आए। पुकार-पुकार कर हारकर उठकर चले गए।

हांणे कीं करियां केडा वंजां, केहेडो मूंजो हांणे हंद।
पिरी न पसां अंखिऐ, जे मूं कारण आया माया मंझ।। १२ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरा कहां ठिकाना है? अब मैं उन प्रीतम को इन आंखों से नहीं देख पाती, जो मेरे वास्ते माया में आए थे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९७ ।।

बीजी विलामणी

सजण विया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे।
मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न कीं न्हारयो मूं दिल विचारे रे।।
से सजण हांणे कित न्हारियां।। १ ।।

मेरे प्रीतम निकल (चले) गए और मैंने इनकी पहचान नहीं की। मुझसे बहुत चिल्ला-चिल्लाकर कहा, पर मैंने दिल में कुछ भी विचार कर नहीं देखा। अब ऐसे धनी को कहां देखूं? (दर्शन करूं)।

Nijanand App